© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 09 , Issue : 04 | October - December 2022

बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता पर एक अध्ययन

सौरभ कुमार , डॉ सुषमा रानी (प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष)
शोधार्थी, विभाग संस्कृत, ग्लोकल विश्वविद्यालय सहारनपुर

सार

आयुर्वेद और ज्योतिष दोनों ही स्वतंत्र विज्ञान हैं, जिनकी उत्पत्ति विभिन्न विचारधाराओं में हुई है और वे अपनी पूर्ति के लिए किसी अन्य विज्ञान पर निर्भर नहीं हैं। उन्होंने अपने–अपने क्षेत्र में नियम स्थापित किए हैं। यद्यपि उनके पास धर्म, अर्थ, कर्म और मोक्ष के चार छोर हैं, ये विज्ञान दैनिक जीवन में किसी भी अन्य विज्ञान से अधिक उपयोगी हैं। यह अन्य विषयों में भी मदद करता है और उनकी क्षमता को बढ़ाता है। (पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग छह विद्याएं हैं जो ज्योतिष और आयुर्वेद से लाभान्वित होती हैं उत्तर मीमांसा को वेदांत भी कहा जाता है)। इन छह विद्याओं को षड दर्शन के नाम से जाना जाता है। आयुर्वेद और ज्योतिष ऐसे विज्ञान हैं जो अनुभवजन्य साक्ष्य द्वारा सिद्ध किए जाने में सक्षम हैं। दूसरे शब्दों में वे अध्ययनों द्वारा सत्यापित किए जाने में सक्षम हैं। हम सूर्य और चंद्रमा को अपनी आंखों से देखते हैं। इसी तरह आयुर्वेद द्वारा सुझाए गए उपचार भी हमारी बीमारियों के लिए तुरंत उपचार प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्दः– आयुर्वेद और ज्योतिष।

बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता

महाभारत.द्वारा पुराणों से हमारा तात्पर्य अठारह पुराणों से नहीं है, बल्कि वास्तव में उन पुराणों और इतिहास से है जो वेदों में पाए जाते हैं।

वर्ष, मास, वार, नक्षत्र, तिथि योग और करण जैसी अवधारणाएं, जो वास्तव में समय की माप हैं, उनका मूल वेदों में है।

वेद सूखे और बाढ़ दोनों के लिए उपाय बताते हैं। ये सभी मनुष्य के उत्थान के लिए हैं। इस प्रकार ज्योतिष ध्यान में आया। सिफारिश करके, हमारे आहार के लिए क्या करें और क्या न करें, आयुर्वेद के लिए वेद आधार का निर्माण करते हैं। रुद्रम चमकम में, हमें चावल, गेहूं, काले चने, हरे चने जैसी वस्तुओं की एक सूची मिलती है जिन्हें खाद्य पदार्थों के रूप में सुझाया गया है।

संस्कृत साहित्य के इतिहास में हमें आयुर्वेद और ज्योतिष का प्रचुर उल्लेख मिलता है। पुराणों और इतिहासों में उल्लिखित शादियों और राज्याभिषेक में हमें मुहूर्त शास्त्र की झलक मिलती है। इसी प्रकार हमें प्राचीन संस्कृत विद्या में युद्धों के वर्णन में अश्व वैद्य (हाथियों का इलाज) और आयुर्वेदिक संदर्भ मिलते हैं।

चरक को आयुर्वेद का प्रतिपादक माना जाता है। घोड़ों के इलाज के लिए नकुल (पांच पांडवों में से एक) को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसी तरह, पालक्य ऋषि हस्ती आयुर्वेद (हाथियों का उपचार) के प्रतिपादक हैं, सहदेव, पाँच पांडवों में से एक, ज्योतिष के प्रतिपादक माने जाते हैं।

यात्राओं, शिकार अभियानों और युद्ध की तैयारियों के लिए निमित्त शास्त्र या शकुन विज्ञान उपयोगी था। रामायण में, जैसे ही राम वनवास जाने की तैयारी कर रहे थे, हल्की बूंदाबांदी हो रही थी। इसे एक अच्छा शगुन माना गया, जो उनकी भविष्य की सफलता का संकेत देता है।

कथा सरित सागर और बृहत् कथा मंजरी जैसे काव्यों में ऐसे शकुनों के कई उदाहरण हैं। इन महाकाव्यों में जहाँ कहीं भी आवश्यकता पड़ी, ज्योतिष और आयुर्वेद का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि आयुर्वेद और ज्योतिष इन दो विज्ञानों का संस्कृत साहित्य में व्यापक रूप से प्रयोग हुआ है।

गर्मी और सर्दी का असर

खगोल विज्ञान समय का विज्ञान है। यह हमें आकाशीय पिंडों की गति के बारे में बताता है। गणित, होरा और निमिथ तीन अलग–अलग अवधारणाएँ हैं। गणित गणित है। होरा कुंडली को संदर्भित करता है और निमिथ गणित और होरा दोनों के लिए सहायक भूमिका निभाता है। गणित ग्रहों के पारगमन की व्याख्या करता है। एक व्यक्ति के लिए जब हम कुंडली बनाते हैं, तो अलग–अलग ग्रह लग्न से अलग–अलग दूरी दिखाते हैं और परिणामस्वरूप उनके द्वारा दिखाए जाने वाले प्रभाव अलग–अलग होते हैं। समय पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों के लिए सामान्य है। लेकिन जो चीज ग्रहों के रूप में समय को एक व्यक्ति से जोड़ती है, वह लग्न है। इसके साथ ही समय के साथ और कोई संबंध नहीं रह जाता है। अन्य सभी व्यक्ति के पूर्व जन्म कर्म के आधार पर ज्योतिष में तय किया जाता है। इस प्रकार ज्योतिष वह विज्ञान है जो व्यक्ति के पूर्व जन्म कर्म के निर्धारण के लिए आकाशीय पिंडों की गति को ध्यान में रखता है। समीप्य (निकटता) और असमीप्य (निकटता का अभाव) और राशि चक्र के किसी विशेष चिन्ह में ग्रह द्वारा व्याप्त डिग्री परिणाम को प्रभावित करने वाले कारक हैं। ग्रहों की ताकत और कमजोरी और उनकी व्यक्तिगत विशेषताएं भाग्य का अनुमान लगाने की कुंजी हैं। जिस प्रकार ऋतुओं का परिवर्तन संपूर्ण जीवों के व्यवहार को प्रभावित करता है, उसी प्रकार ग्रहों के प्रभाव के साथ आयु कारक मानव व्यवहार के पैटर्न को तय करते हैं। ऋतुओं का परिवर्तन व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ मिलकर व्यवहार संशोधनों को तय करता है। फल अनुमान के माध्यम से तय किए जाते हैं अनुभवजन्य साक्ष्य नहीं। अनुमान का आधार समय है। ऋषियों में यह समझने की शक्ति है कि एक सामान्य व्यक्ति के लिए क्या संभव नहीं है। ऋषियों ने अपने कार्यों के माध्यम से बताया है कि पूर्व पुण्य कैसे काम करता है और इसे आकाशीय पिंडों की गति से कैसे समझा जा सकता है।

आइए एक ऐसी फसल का उदाहरण लें जो 60 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। यहां हम यह मानकर चलते हैं कि बारिश से कोई बाधा नहीं आएगी। अगर बारिश होती है तो सभी फसलें फसल के लिए उपयुक्त नहीं होंगी। यह इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए है कि प्रत्येक बीज द्वारा प्राप्त वर्षा का भाग अलग–अलग होता है। यदि किसी ऊँची भूमि पर पौधे हों तो जल नीचे की ओर बहेगा और जल शेष नहीं रहेगा। निचले स्थान की फसलों को अधिक पानी मिलेगा। इसी प्रकार ग्रहों के प्रभाव की सीमा भी अलग–अलग फल देती है। जन्म के समय ग्रहों का प्रभाव, वृद्धि के समय ग्रहों का प्रभाव, ग्रहों की निकटता के आधार पर अंतिम परिणाम को संशोधित करता है।

एक नवजात शिशु सुख और दर्द के प्रति उदासीन होता है। मध्य आयु व्यक्ति को कामुक अनुभवों के प्रति संवेदनशील बनाती है। ग्रहों के प्रभाव के साथ मिलकर मन–शरीर की घटना परिणामों के लिए जिम्मेदार है। इस प्रकार व्यक्तिगत अनुभव उनके अपने पिछले कर्मों की पृष्ठभूमि में भिन्न होते हैं, जिसे हम पूर्व पुण्य कहते हैं। ग्रहों के प्रभाव के आधार पर अपने अनुभव को आंकने के लिए मनुष्य के जीवन की अवस्था या अवस्था महत्वपूर्ण होती है। हम किसी व्यक्ति के जीवन की अवस्था को ध्यान में रखे बिना ग्रह प्रभाव के प्रभाव की व्याख्या नहीं कर सकते हैं। इस सिद्धांत का एक उदाहरण बालारिष्टम है। यह केवल उनके बचपन में बच्चों पर लागू होता है। बच्चे के बड़े होने के बाद इसका कोई प्रभाव

नहीं पड़ता है। ष्बालारिष्टमष् नामक यह अवधारणा सीधे जीवन के चरण से जुड़ी हुई है। यहां तक कि जन्म संपत विपत जैसी अवधारणाएं भी।

यदि किसी व्यक्ति के जीवन की प्रथम दशा (जन्म दशा) सप्तमेश की हो तो भी उसका विवाह नहीं होगा। दूसरी ओर जब लड़का विवाह योग्य आयु प्राप्त करता है तो किसी ग्रह की दशा सबसे अनुकूल होती है।

शादी, उसकी शादी करवा देंगे। इस प्रकार जीवन का चरण ग्रहों के प्रभावों के प्रभाव को निर्धारित करता है।

दशा क्रम लग्न पर आधारित नहीं है। यह जन्म के समय चंद्रमा के कब्जे वाले तारे पर आधारित है। इस प्रकार खगोल विज्ञान ज्योतिष को प्रभावित नहीं करता है। यह व्यक्ति का जन्म समय है जो दशा क्रम के रूप में उसके भाग्य को प्रभावित करता है।

यह भव स्वामी नहीं है, जो उसे प्रभाव देता है। यह दशा अनुक्रम है, जिसकी उत्पत्ति किसी व्यक्ति के जन्म के समय में होती है, जो जीवन के अनुभवों की दिशा निर्धारित करता है।

रोग जन्म से मृत्यु तक अनुभव करने में सक्षम हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति के छोटे बालक बनने पर उसकी मृत्यु तक दुःख या सुख का अनुभव किया जा सकता है। इस प्रकार जीवन की अवस्था में इन अवधारणाओं के लिए कोई अनुप्रयोग नहीं है। हालाँकि विवाह, बच्चों का जन्म और रोजगार जीवन के चरण से जुड़े हुए हैं। एक नवजात शिशु की शादी नहीं हो सकती या उसके बच्चे नहीं हो सकते। इसी तरह एक बूढ़े आदमी को काम पर नहीं रखा जा सकता है।

मानव शरीर पंचतत्वों से बना है। इन पांच तत्वों में से अग्नि और जल सभी परिवर्तनों के लिए उत्तरदायी हैं। प्रसार और स्थान के लिए क्रमशः वायु और ईथर जिम्मेदार हैं। उपरोक्त सभी क्रियाओं के होने का आधार पृथ्वी या पृथ्वी है। इस प्रकार यह किसी चीज का मूल गुण है जो संशोधनों के लिए जिम्मेदार है। इसलिए यह उचित ही है कि जीवन का चरण ग्रहों के प्रभाव की सीमा निर्धारित करता है।

प्रचंड गर्मी ऊँचे पेड़ों को नष्ट कर देती है। अधिक वर्षा से छोटे ग्रह नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार गर्मी या ठंड पौधे की उम्र के आधार पर विनाशकारी होती है। इसलिए ग्रहों की दशाएं भी व्यक्ति की अवस्था के आधार पर मनुष्य को प्रभावित करती हैं, जो फिर से पूर्व पुण्य पर आधारित होता है जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होता है। अवास्ता विकासवादी क्रम पर आधारित है। इस प्रकार यह दास, भुक्ति या अंतरा नहीं है जो सभी घटनाओं का आधार है। यह एक व्यक्ति का अवास्ता है जो घटनाओं के होने का फैसला करता है। जब अवास्ता किसी घटना का समर्थन करता है, तो दास/भुक्ति या अंतरा सक्रिय हो जाता है और उसका प्रदर्शन करता है।

कुछ मामलों में सभी योग्यताओं वाले व्यक्ति को नौकरी नहीं मिलती है। बिना योग्यता वाले दूसरे व्यक्ति को नौकरी मिल जाती है। अच्छे गुणों वाले व्यक्ति का विवाह तमाम कोशिशों के बावजूद नहीं हो पाता है। बिना किसी प्रयास के एक और आदमी शादी कर लेता है। इसी तरह हम देखते हैं कि कुछ लोगों के पास धन बिना किसी प्रयास के आता है। कुछ लोग दो बार शादी कर लेते हैं जबकि कुछ कुंवारे रहते हैं। कुछ लोग अक्सर दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं लेकिन मरते नहीं हैं। सुरक्षित जीवन शैली वाले कुछ लोग मर जाते हैं। ये सब पूर्व पुण्य के कारण हैं। ऐसी घटनाएँ अकेले समय के कारण नहीं हो सकतीं। यह व्यक्ति का कर्म है जो जिम्मेदार है लेकिन यह समय द्वारा सक्रिय होता है।

विकासवादी क्रम में ज्ञानेन्द्रियाँ अलग–अलग समय पर सक्रिय होती हैं। केवल ऐसे समय में, ग्रह प्रभाव जीवन के स्तर के लिए उपयुक्त होते हैं और अपना काम करते हैं।

ज्योतिष में 3 बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है। (1) ज्योतिष, (2) खगोल विज्ञान, (3) अवधारणाओं का अनुप्रयोग। खगोल विज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान है जो सभी जीवित प्राणियों के लिए समान परिणाम प्रदान करता है। ज्योतिष व्यक्तियों पर लागू होता है और जन्म के समय और उस समय प्रचलित ग्रहों के प्रभावों से जुड़ा होता है जो लग्न के दृष्टिकोण से विश्लेषण में परिलक्षित होता है, ग्रहों की षडवर्गीय ताकत और उनके जीवन से घनिष्ठ रूप से जुड़ा होता है। यह स्वतंत्र भी है लेकिन लग्न के रूप में व्यक्ति के जीवन द्वारा सीमांकित है। राशि चक्र में केवल बारह राशियाँ होती हैं और इसलिए बारह लग्न नौ ग्रहों द्वारा परिसीमित हैं और उनसे प्राप्त संबंधों से सभी परिणामों की भी इस विज्ञान द्वारा चर्चा की जाती है। मन, शरीर और विचार क्रम की स्थिति इन ग्रहों के प्रभाव के परिणाम को तय करेगी और इसलिए हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ये ग्रह प्रभाव मन–शरीर की स्थिति से स्वतंत्र व्यक्ति में परिणाम देने में अक्षम हैं। ग्रहों के प्रभावों की चर्चा ऋषियों द्वारा व्यक्ति के भाग्य और कर्म के अनुसार की जाती है।

जिस ग्रह की दशा या भुक्ति चल रही हो, यदि किसी व्यक्ति को वीर्य संबंधी रोग (शुक्रासमारी) आ जाए और वह छोटा बच्चा हो, तो वह रोग तब नहीं आएगा, जब बच्चा अभी उस उम्र तक नहीं पहुंचा होगा। , जहां उस बीमारी की संभावना मौजूद हो। इसी प्रकार यदि दो वर्ष की कन्या का विवाह करने योग्य काल चल रहा हो, तो परिणाम फलीभूत नहीं होंगे। इसी तरह एक वृद्ध व्यक्ति को भी धन संपदा योग (धन प्रदान करने वाला योग) या विवाह योग (शादी के लिए योग) से संबंधित परिणाम नहीं मिल सकते हैं क्योंकि ये जीवन के चरण के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

पूर्व पुण्य विचारों की ओर ले जाता है और ये विचार ग्रहों की स्थिति के साथ मिलकर परिणाम दे सकते हैं। इस प्रकार पूर्व पुण्य सभी घटनाओं का प्रमुख कारण है। समय या ज्योतिष स्वतंत्र नहीं है। इसी तरह, आयुर्वेद में भी तीन रोग कारक हैं

(1) गलत खान–पान
(2) गलत विचार
(3) समय

पहले दो कारक एक व्यक्ति से संबंधित हैं। ऋतुओं के रूप में काल से अधिक प्रथम दो कारक प्रबल हैं। उनका बकाया है पूर्व पुण्य की उपस्थिति। इस प्रकार पूर्व पुण्य ज्योतिष और आयुर्वेद के लिए सामान्य है। चूंकि हम इन दोनों विज्ञानों में सिद्धांतों का मिश्रण पाते हैं, इसलिए चिकित्सा ज्योतिष बुद्धिजीवियों द्वारा समझने योग्य विज्ञान है।

अग्नि गर्मी को संदर्भित करता है। सोम ठंडक को दर्शाता है। अग्नि और सोम दोनों ही हिंदू शिक्षाओं में देवता हैं। आयुर्वेद में स्वास्थ्य वात, पित्त और कफ के संतुलन पर आधारित है। पित्त और कफ क्रमशः गर्मी और ठंडक को संदर्भित करते हैं।

समय वैदिक संस्कारों के प्रदर्शन के लिए है। यह वैदिक दृष्टिकोण है। ज्योतिष के अनुसार समय ईश्वर (ईश्वर) है। आयुर्वेद के अनुसार, समय संशोधनों (परिनाम) का प्रतिनिधि है। इस प्रकार इन तीन सिद्धांतों द्वारा समय को विभिन्न कोणों से देखा जाता है।

आयुर्वेद और ज्योतिष में निमिथकर्ण के रूप में समय है। दूसरे शब्दों में, इन सिद्धांतों को पूर्ण विज्ञान बनाने के लिए समय की आवश्यकता है। ज्योतिष में, हम पाते हैं कि सूर्य चंद्रमा के ढलने के चरण (कृष्ण पक्ष) में मजबूत होता है, जबकि चंद्रमा अपने बढ़ते हुए बल में प्रगति करता है।

संदर्भ

- निजाअगंतु विभगेना तत्र रोगा द्विदा स्मृतिहा (अष्टांग ह्रदयम, सूत्रस्थानम, च 1, वे 20)
- असत्मेंद्रियर्थे संयोगः प्रज्ञा अपरदः परिणामेस्चेति त्रयस्त्रिविध विकल्प हेतवो विकारम समययोग युक्तस्तु प्रकृति हेतवो भवन्ति (चरक संहिता, पृष्ठ 226, वे 43)
- आत्मा मनसा संयुज्यते मन इन्द्रियेना, इन्द्रियम अर्थेना (वराहमिहिर होरास्त्रम, पृष्ठ 100)
- आयुः, कर्मच, विठम्चा, विद्या, निदानमेव च, पंच एथानि च सिद्धयन्ते गर्भस्थस्य इवा देहिनाः (पंचतंत्रम 2.85, सुभाषिता रत्न भंडारम 162/428)
- चरक संहिता, विमानस्थानम, पृष्ठ 964।
- प्रारब्ध कर्मनाम भोगदेव क्षयः (सनातन धर्म पृष्ठ 74)
- प्रकृतम अरबधाम स्व कार्य जननाय इथि प्रारब्धम् (शब्द कल्पद्रुम, खंड 3, पृष्ठ 364)
- रुजाति इति रोगहा (अष्टांग ह्रदयम, पृष्ठ 1)
- **नोट्स और संदर्भ**
- वराहमिहिर का बृहत् जातक
- सीएच आई, सेंट 6 पृष्ठ 43 पर नोट्स
- टीआर बीएसराव
- कालाग्नि वरंगमना नमुरो ह्रत्क्रोदवसो भर्तो